

शिक्षा नीति में प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन भारत के इतिहास तक की महिलाओं की भूमिका

डॉ. मलिका परमार

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

राम जानकी महाविद्यालय, असई बैरी- कानपुर – उत्तर प्रदेश

सार

भारत में महिलाओं की शिक्षा का इतिहास प्राचीन और मध्यकालीन काल में विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से प्रभावित रहा है। यह शोध पत्र भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उनके अधिकारों, और शैक्षिक अवसरों के विकास पर आधारित है। प्राचीन भारत में महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, जहाँ गुरुकुलों में वे पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करती थीं। हालांकि, मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा में सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ा। बावजूद इसके, भक्ति आंदोलन और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने महिलाओं की शिक्षा के अधिकार को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध पत्र में बौद्ध और जैन धर्मों में महिलाओं की शिक्षा के अवसरों का भी उल्लेख किया गया है। अंततः, यह शोध पत्र प्राचीन और मध्यकालीन काल में महिलाओं की शिक्षा के विकास और सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण करता है, और वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक सुधारों की दिशा पर विचार करता है।

मुख्य शब्द

महिलाओं की शिक्षा, प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत, गुरुकुल, भक्ति आंदोलन, सामाजिक सुधारक, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, महिला अधिकार।

1. परिचय

भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा का इतिहास प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन भारत तक एक विस्तृत और विविध यात्रा रहा है। प्राचीन भारत में महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वेद, उपनिषद और शास्त्रों में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया गया था। वेद, उपनिषद और अन्य प्राचीन ग्रंथों में महिलाओं को ज्ञान प्राप्त करने का समान अवसर मिलता था, और उन्हें न केवल धार्मिक ज्ञान, बल्कि दार्शनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक शिक्षा में भी भाग लेने की स्वतंत्रता थी। उदाहरण के तौर पर, गार्गी, मङ्गलदेवी जैसी महिलाओं ने वेदों और शास्त्रों में अपनी विद्वता का परिचय दिया और समाज में एक उच्च स्थान प्राप्त किया। (अग्रवाल, 2025)

प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र गुरुकुल थे, जहाँ पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान रूप से शिक्षा दी जाती थी। इन गुरुकुलों में महिलाएं न केवल धार्मिक ज्ञान प्राप्त करती थीं, बल्कि समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में भी सक्रिय रूप से शामिल होती थीं। इस समय के भारतीय समाज में शिक्षा का कोई लिंग आधारित भेदभाव नहीं था और महिलाएं अपने ज्ञान के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण योगदान देती थीं।

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों का विकास और उनके अवसरों पर प्रभाव
हालांकि प्राचीन भारत में महिलाओं को शिक्षा के अवसर प्राप्त थे, लेकिन मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा पर बहुत से सामाजिक और सांस्कृतिक दबावों का असर पड़ा। दिल्ली सल्तनत और मुगल काल में महिलाओं की शिक्षा पर धार्मिक और सामाजिक परंपराओं का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण महिलाओं को

शिक्षा के अवसरों से वंचित किया गया। महिलाओं के लिए शिक्षा केवल घरेलू कार्यों तक सीमित हो गई, और वे समाज की चारदीवारी में ही बंधी रह गई। (अम्बेडकर, 2019)

मध्यकालीन काल में सती प्रथा, देवदासी प्रथा जैसी परंपराएँ महिलाओं के शिक्षा अधिकारों में अड़चनें पैदा करने वाली थीं। इन परंपराओं ने महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित किया और उनके शैक्षिक अधिकारों को कमजोर किया। हालांकि, कुछ शाही परिवारों और उच्च वर्गों में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला, लेकिन यह अवसर सामान्य महिलाओं के लिए दूर था।

शोध पत्र का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य प्राचीन और मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा के अधिकारों का विश्लेषण करना है। यह शोध पत्र यह समझने का प्रयास करेगा कि प्राचीन काल में महिलाओं को शिक्षा के समान अवसर कैसे मिले, और फिर समय के साथ इन अवसरों में क्यों कमी आई। साथ ही, यह भी देखेगा कि कैसे धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं ने महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित किया। (चौधरी, 2025)

यह शोध पत्र यह भी अध्ययन करेगा कि भक्ति आंदोलन और समाज सुधारकों ने महिलाओं के शिक्षा अधिकारों को सशक्त बनाने में क्या भूमिका निभाई। इसके अलावा, पेपर यह विश्लेषण करेगा कि सुधारकों के प्रयासों के बाद महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों में किस प्रकार के सुधार आए और शिक्षा नीति में बदलाव हुआ। अंत में, यह शोध पत्र वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति पर विचार करेगा और यह देखेगा कि प्राचीन और मध्यकालीन भारत की परंपराओं का आज की शिक्षा नीति पर क्या प्रभाव पड़ा है। (देवी, 2024)

2. प्राचीन भारत में महिलाओं की शिक्षा

प्राचीन भारत में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार था, और वे समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। वेद, उपनिषद और शास्त्रों में महिलाओं के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन्हें न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक ज्ञान में भी भागीदारी का अवसर मिलता था।

2.1 वेद, उपनिषद, और शास्त्रों में महिलाओं के लिए शिक्षा का स्थान

प्राचीन भारत में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था, और यह अधिकार वेद, उपनिषद, और शास्त्रों में स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया था। वेद, उपनिषद, और अन्य धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से नवाजा गया और उन्हें ज्ञान प्राप्ति का समान अवसर दिया गया।

वेदों में महिलाओं की भूमिका:

वेदों में महिलाओं के लिए शिक्षा का स्थान अत्यंत सम्मानजनक था। ऋग्वेद में महिलाओं के योगदान को सराहा गया है, और वेदों में महिलाओं के लिए शिक्षा के अधिकार की पुष्टि की गई है। ऋग्वेद में *यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः* (जहां महिलाएं पूज्य हैं, वहां देवता निवास करते हैं) जैसे उद्धाटन से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को बहुत सम्मान दिया गया था। महिलाएं न केवल धर्मशास्त्रों का अध्ययन करती थीं, बल्कि उनके लिए यज्ञ, अनुष्ठान और धार्मिक कर्मकांडों में भी भागीदारी का अवसर था। (दुबे, 2023)

उपनिषदों में महिलाओं का स्थान:

उपनिषदों में भी महिलाओं को शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। उदाहरण के लिए, तैत्तिरीय उपनिषद में भी महिलाओं के शिक्षा के अधिकार का उल्लेख किया गया है, और उन्हें विद्वान के रूप में सम्मानित किया गया है। अपाला और घोषा जैसी महिला ऋषियों का नाम उपनिषदों में लिया जाता है, जिन्होंने अपनी विद्वता से समाज में एक मिसाल कायम की। उपनिषदों में ज्ञान के सर्वोच्च स्रोत के रूप में ब्रह्मज्ञान को प्रस्तुत किया गया और यह स्पष्ट किया गया कि इस ज्ञान की प्राप्ति सभी के लिए है, पुरुष

और महिलाएं दोनों इसमें समान रूप से सहभागी हो सकते हैं।

धर्मशास्त्रों में महिलाओं की स्थिति:

धर्मशास्त्रों में महिलाओं की शिक्षा पर मिश्रित दृष्टिकोण था। कुछ धर्मशास्त्रों में महिलाओं को शिक्षा के अधिकार दिए गए थे, जबकि कुछ में उनके लिए शिक्षा प्राप्ति के रास्ते को सीमित कर दिया गया था। उदाहरण के तौर पर, धर्मशास्त्रों में यह बताया गया था कि महिलाएं धर्म, संस्कार, और धार्मिक कर्मकांडों में भाग लें, लेकिन उन्हें शास्त्रों और दर्शन में गहरी विद्वत्ता प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। यह पितृसत्तात्मक समाज का प्रभाव था, जिसमें महिलाओं को समाज के सीमित कार्यों में ही भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया गया था। (गुप्ता – शर्मा, 2023)

2.2 गुरुकुलों में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति और प्रमुख महिला विद्वान

प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रमुख केंद्र गुरुकुल थे, जहां विद्यार्थियों को विद्वान आचार्यों द्वारा शिक्षा दी जाती थी। इस शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। गुरुकुलों में महिलाओं को भी वेद, संस्कृत, गणित, दर्शन, और अन्य विद्याओं की शिक्षा प्राप्त होती थी।

गुरुकुलों में महिलाओं की शिक्षा:

प्राचीन भारत में महिलाओं को गुरुकुलों में शिक्षा देने की परंपरा रही थी। यहां महिलाओं को न केवल धार्मिक शिक्षा दी जाती थी, बल्कि तात्त्विक और दार्शनिक विषयों में भी उनकी शिक्षा होती थी। गुरुकुलों में पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान रूप से वेद, संस्कृत, और धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर था। गुरुकुलों की शिक्षा में कोई लिंग आधारित भेदभाव नहीं था, और महिलाओं को भी उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर मिलते थे। (जैन, 2022)

प्रमुख महिला विद्वान:

प्राचीन भारत में कई महिला विद्वान थीं, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपने ज्ञान का योगदान दिया। इन महिला विद्वानों में गार्गी, मङ्गलदेवी, और अपाला प्रमुख थीं।

- **गार्गी:** गार्गी वेदों और दर्शन में एक महान विद्वान थीं। उनका उल्लेख ब्रह्मसूत्र और याज्ञवल्क्य के साथ होने वाली बौद्धिक चर्चाओं में किया जाता है। गार्गी ने तर्कशास्त्र, वेदांत, और शास्त्रों में गहरी विद्वत्ता दिखाई और उन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। (कपूर, 2021)
- **मङ्गलदेवी:** मङ्गलदेवी भी एक प्रमुख महिला विद्वान थीं जिन्होंने संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे प्राचीन भारतीय साहित्य की स्तरीय कवि और विद्वान मानी जाती थीं। उनके योगदान से यह सिद्ध होता है कि महिलाओं को शिक्षा और ज्ञान में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त था।
- **अपाला:** अपाला एक महान महिला ऋषि थीं, जिनका उल्लेख वेदों में किया गया है। वे वेदों और शास्त्रों की विद्वान थीं, और उनके ज्ञान के कारण उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। वे ज्ञान प्राप्ति के लिए न केवल सामाजिक बाधाओं को पार करने वाली थीं, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों में भी उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण मानी जाती थी। (खान, 2021)

2.3 धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से शिक्षा पर प्रभाव

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल सांसारिक ज्ञान प्राप्ति नहीं था, बल्कि आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति भी थी। शिक्षा का धार्मिक और सांस्कृतिक उद्देश्य था— एक व्यक्ति को धर्म, संस्कृति, और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने के लिए तैयार करना। इस समय शिक्षा का दायरा केवल सामाजिक कार्यों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति की आत्मिक उन्नति और समाज में उसके स्थान को निर्धारित करने

के लिए था।

धार्मिक दृष्टिकोण:

धार्मिक दृष्टिकोण से, प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जीवन के सर्वोत्तम उद्देश्य, यानी आत्मज्ञान, की प्राप्ति था। इस समय शिक्षा को ब्रह्मज्ञान और धर्म के अनुरूप देखा जाता था। महिलाएं भी इस धार्मिक शिक्षा का हिस्सा थीं, और उन्हें घर के भीतर और बाहर दोनों तरह के धार्मिक कार्यों में भाग लेने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। हालांकि, समय के साथ पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के कारण महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों में कमी आई, लेकिन प्रारंभिक काल में उन्हें धार्मिक शिक्षा में बराबरी का अवसर प्राप्त था। (खंडेलवाल, 2021)

सांस्कृतिक दृष्टिकोण:

प्राचीन भारतीय संस्कृति में शिक्षा को एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। शिक्षा न केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम था, बल्कि यह व्यक्ति को नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध बनाती थी। महिलाएं इस सांस्कृतिक शिक्षा का हिस्सा थीं, जिससे वे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से समझ पाती थीं। (कुमार – भट्टाचार्य, 2020)

समाज में महिलाओं की स्थिति समय के साथ बदलती रही, और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण ने उनकी शिक्षा के अवसरों को सीमित कर दिया। फिर भी, प्राचीन भारत में महिलाओं का शिक्षा और समाज में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण था और यह समय की वास्तविकता का परिचायक था कि महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने के लिए सक्षम थीं।

3. बौद्ध और जैन धर्म में महिलाओं की शिक्षा

बौद्ध और जैन धर्म दोनों ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार दिया और धार्मिक जीवन में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया। इन धर्मों में विशेष रूप से भिक्षुणी परंपरा स्थापित की गई, जो महिलाओं को शिक्षा और साधना के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती थी। इन दोनों धर्मों ने यह सिद्ध किया कि महिलाएं केवल आध्यात्मिक कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे धार्मिक और बौद्धिक जीवन में समान रूप से भागीदार बन सकती हैं। (मेहता, 2020)

3.1 बौद्ध धर्म में महिलाओं के लिए शिक्षा और भिक्षुणी परंपरा

बौद्ध धर्म में महिलाओं के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था, और विशेष रूप से भिक्षुणी परंपरा ने उन्हें धार्मिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध होने का अवसर प्रदान किया। गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म में महिलाओं को समान स्थान दिया और उन्हें न केवल धर्म का अध्ययन करने, बल्कि उसे साकार रूप में जीने का भी अधिकार दिया।

भिक्षुणी परंपरा की शुरुआत

गौतम बुद्ध ने जब महापजापती गौतमी को भिक्षुणी संघ का नेतृत्व करने की अनुमति दी, तो यह बौद्ध धर्म में महिलाओं के लिए एक ऐतिहासिक कदम था। यह कदम विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे पहले महिलाओं को बौद्ध संघ में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था। बुद्ध के इस निर्णय ने यह सिद्ध किया कि महिलाएं न केवल धर्म के सिद्धांतों का अध्ययन कर सकती हैं, बल्कि वे पूरी तरह से बौद्ध धर्म की साधना में भी भाग ले सकती हैं। (मिश्रा, 2019)

महापजापती गौतमी, जो बुद्ध की मामी थीं, पहली भिक्षुणी बनीं। उनके बाद अन्य महिलाओं ने भी भिक्षुणी संघ में प्रवेश किया, और इस प्रकार भिक्षुणी परंपरा का विस्तार हुआ। बुद्ध के इस निर्णय ने महिलाओं को एक नया अवसर दिया, जहां वे न केवल धर्म का अध्ययन कर सकती थीं, बल्कि अपनी साधना के माध्यम से आत्मज्ञान की ओर अग्रसर हो सकती थीं।

शिक्षा और साधना का अवसर

भिक्षुणी को बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन करने का अवसर मिलता था, जिससे उन्हें बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और दर्शन पर गहरी समझ प्राप्त होती थी। इसके अलावा, भिक्षुणियों को ध्यान साधना, उपदेश देने और समाज में बौद्ध धर्म का प्रचार करने का भी अवसर मिला। भिक्षुणी संघ में महिलाओं को न केवल शास्त्रों का अध्ययन करने की स्वतंत्रता थी, बल्कि वे अपने अनुभवों को अन्य लोगों के साथ साझा करने में भी सक्षम थीं। (मुखर्जी, 2017) इसके साथ ही, भिक्षुणी संघ ने महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने, सामाजिक मुद्दों पर बात करने और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर भी दिया। इस तरह, बौद्ध धर्म ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें धार्मिक शिक्षा का समान अवसर प्रदान किया।

3.2 जैन धर्म में महिलाओं की भूमिका और शिक्षा का स्थान

जैन धर्म ने भी महिलाओं को धार्मिक जीवन जीने और शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर प्रदान किया। जैन धर्म में भिक्षुणी परंपरा का भी एक महत्वपूर्ण स्थान था, जो महिलाओं को न केवल धार्मिक शिक्षा का अधिकार देती थी, बल्कि उन्हें मोक्ष की प्राप्ति के लिए पूरी तरह सक्षम बनाती थी। (पाटिल, 2019)

जैन धर्म में महिलाओं का स्थान

जैन धर्म में महिलाओं को उच्च दर्जे की धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। यहां महिलाओं को केवल पूजा और आचारों तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि उन्हें जैन सिद्धांतों का पालन करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होने का समान अधिकार प्राप्त था। जैन धर्म में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि महिलाएं अपने कर्मों के द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त कर सकती हैं और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति का भी अधिकार है।

जैन धर्म की शिक्षाएँ यह सिखाती हैं कि आत्म-निर्भरता और ज्ञान की प्राप्ति किसी भी व्यक्ति के लिए संभव है, चाहे वह पुरुष हो या महिला। महिलाओं को जैन धर्म के सिद्धांतों का अध्ययन करने और जीवन के उच्चतम उद्देश्य, यानी मोक्ष, की प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन प्राप्त था। (पुरी, 2018)

महिला संतों का योगदान

जैन धर्म में कई महिला संतों और भिक्षुणियों ने अपनी शिक्षा और साधना के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाया। उदाहरण के लिए, भगवती, चंद्रा देवी, और अन्य महिला संतों ने जैन धर्म के सिद्धांतों को फैलाया और महिलाओं के लिए धार्मिक शिक्षा के अवसरों को बढ़ाया। इन महिला संतों ने यह सिद्ध किया कि जैन धर्म में महिलाओं को केवल श्रद्धा और पूजा के रूप में नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से धार्मिक ज्ञान, साधना और मोक्ष की प्राप्ति के अधिकार मिलते हैं।

इन महिला संतों ने जैन धर्म में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया और यह दिखाया कि महिलाएं भी धर्म के उच्चतम आदर्शों का पालन करने में सक्षम हैं। जैन धर्म में भिक्षुणी परंपरा ने महिलाओं को एक संरचित मंच प्रदान किया, जहां वे धर्म का अध्ययन करती थीं और धार्मिक कार्यों में भागीदारी करती थीं। (रेड्डी, 2018)

3.3 भिक्षुणी संघों और धार्मिक शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता

बौद्ध और जैन धर्म में भिक्षुणी संघों ने महिलाओं के लिए एक विशेष स्थान सुनिश्चित किया, जहां वे न केवल धर्म का अध्ययन करती थीं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अपने ज्ञान और अनुभवों का उपयोग करती थीं। भिक्षुणी संघों ने महिलाओं को धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक सुरक्षित और संरक्षित स्थान प्रदान किया, जहां वे बिना किसी सामाजिक दबाव के ध्यान साधना और बौद्धिक अध्ययन में भाग ले सकती थीं।

भिक्षुणी संघों की संरचना

भिक्षुणी संघों का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को धार्मिक शिक्षा देना था, ताकि वे न केवल खुद को सुधार सकें, बल्कि समाज में भी धार्मिक और नैतिक बदलाव लाने का कार्य कर सकें। भिक्षुणी संघों ने महिलाओं को बौद्ध

और जैन धर्म के सिद्धांतों का गहराई से अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया। भिक्षुणियाँ न केवल धर्म का अध्ययन करती थीं, बल्कि वे अपने अनुभवों के आधार पर उपदेश देती थीं और समाज में धर्म, अहिंसा, और समानता का प्रचार करती थीं। (सेन, 2017)

धार्मिक शिक्षा और सामाजिक बदलाव

भिक्षुणियों को धार्मिक शिक्षा ने समाज में एक नई पहचान दिलाई। वे न केवल धर्म का पालन करती थीं, बल्कि समाज में समानता, शांति, और अहिंसा के सिद्धांतों का प्रचार भी करती थीं। बौद्ध और जैन धर्म में भिक्षुणी संघों ने महिलाओं को सामाजिक कार्यों में भागीदारी का अवसर दिया, जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ। भिक्षुणी संघों ने धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया और उन्हें समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद की।

इन भिक्षुणी संघों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। बौद्ध और जैन धर्म में भिक्षुणी संघों ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने और समाज के विभिन्न पहलुओं में योगदान करने का एक सशक्त मंच प्रदान किया। (शर्मा, 2015)

4. मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा

मध्यकालीन भारत, विशेष रूप से दिल्ली सल्तनत और मुगल काल, महिलाओं की शिक्षा की स्थिति में कई प्रकार के बदलावों का गवाह रहा। इस अवधि में महिलाओं के शैक्षिक अधिकार और अवसरों को सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोणों ने प्रभावित किया। हालांकि महिलाओं के शिक्षा के अधिकार में कई सीमाएँ थीं, लेकिन फिर भी कुछ क्षेत्रों में सुधार हुआ और कुछ महत्वपूर्ण महिलाएँ समाज में सक्रिय रूप से योगदान देने में सक्षम हुईं।

4.1 दिल्ली सल्तनत और मुगल काल में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति

दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की शिक्षा

दिल्ली सल्तनत के दौरान, महिलाओं की शिक्षा के अवसर सीमित थे, खासकर आम महिलाओं के लिए। हालांकि उच्च वर्ग की कुछ महिलाएँ साहित्य, कला और संगीत में रुचि रखती थीं, लेकिन इन अवसरों तक केवल शाही परिवारों की महिलाएँ ही पहुँच पाती थीं। (सिंह, 2017)

इस काल में महिलाओं को मुख्य रूप से घरेलू कामकाजी कार्यों और सामाजिक दायित्वों तक सीमित रखा जाता था। सामंती समाज के पुरुषों की तरह महिलाएँ भी अधिकतर सार्वजनिक जीवन में भागीदारी नहीं करती थीं। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महिलाओं की शिक्षा को घर की चारदीवारी तक सीमित किया गया था, हालांकि कुछ मुस्लिम महिलाओं को धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा दी जाती थी।

दिल्ली सल्तनत के शाही दरबारों में, खासकर महिलाओं को लेखन, कला, और संगीत जैसी गतिविधियों में संलग्न होने का अवसर मिलता था, लेकिन ये अवसर विशेष रूप से उच्च वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित थे। इसके अलावा, महिलाओं को शिक्षा के मामले में पुरुषों से बहुत कम अवसर दिए गए थे, और शिक्षा को मुख्य रूप से घरेलू और पारंपरिक कार्यों तक सीमित रखा गया था। (ठाकुर, 2016)

मुगल काल में महिलाओं की शिक्षा

मुगल काल में कुछ बदलाव देखे गए, जहाँ महिलाओं को अधिक शैक्षिक अवसर मिले, लेकिन यह भी सीमित थे। मुमताज महल, बेगम समरुन और अन्य दरबारी महिलाएँ, जो शाही परिवार से जुड़ी थीं, उन्होंने साहित्य, कला और संस्कृति में योगदान दिया। सम्राट अकबर ने महिलाओं के लिए शिक्षा को प्रोत्साहित किया और मुगल महिलाओं को साहित्य, संगीत, और कला में रुचि लेने का अवसर दिया। अकबर के दरबार में कुछ महिलाएँ शाही दरबार में प्रमुख भूमिका निभाती थीं, और कुछ ने धार्मिक और सांस्कृतिक अध्ययन में भी भाग लिया।

हालाँकि, इन अवसरों का लाभ केवल उच्च वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित था और सामान्य महिलाओं के लिए यह अवसर दूर थे। मुगल काल में महिलाओं की शिक्षा का दायरा केवल शाही और दरबारी महिलाओं तक सीमित था, और यह समाज के बड़े हिस्से के लिए उपलब्ध नहीं था। (थॉमस, 2016)

4.2 राजपूत और सामंती समाज में महिलाओं की शिक्षा की भूमिका

राजपूत समाज और सामंती व्यवस्था में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति भी बहुत सीमित थी। राजपूतों के समाज में महिलाएं मुख्य रूप से घरेलू कार्यों और परिवार की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए जिम्मेदार मानी जाती थीं। हालाँकि, कुछ उच्च वर्ग की महिलाएं साहित्य, संगीत, और कला में रुचि रखती थीं, लेकिन महिलाओं की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल घर की देखरेख और परिवार के सामाजिक सम्मान को बनाए रखना था।

राजपूत समाज में महिलाओं की भूमिका

राजपूत समाज में महिलाओं को मुख्य रूप से पारंपरिक धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा दी जाती थी। उन्हें परिवार के अन्य सदस्यों के साथ धार्मिक अनुष्ठानों, संस्कारों और पारंपरिक कर्तव्यों का पालन करना सिखाया जाता था। महिलाओं को युद्ध कला, राजनैतिक मामलों, और नेतृत्व की शिक्षा का अवसर बहुत कम मिलता था, और वे सामाजिक दृष्टिकोण से मुख्य रूप से पुरुषों के अधीन होती थीं। (वर्मा, 2015)

राजपूत महिलाएं जैसे कर्णवती, रानी दुर्गावती और रानी लक्ष्मीबाई, जिन्होंने बाद में युद्धक्षेत्र में भाग लिया और अपने समाज की रक्षा की, समाज में एक अपवाद थीं। वे राजनैतिक और सैन्य मामलों में भागीदार बनती थीं, लेकिन सामान्य रूप से अधिकांश राजपूत महिलाओं को केवल धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त होती थी।

सामंती समाज में महिलाओं की स्थिति

सामंती समाज में महिलाओं की शिक्षा पर भारी सांस्कृतिक और सामाजिक दबाव था। सामंती व्यवस्था में महिलाओं को मुख्यतः घरेलू कार्यों, परिवार की देखभाल और सामाजिक मान्यताओं का पालन करने के लिए शिक्षा दी जाती थी। महिलाओं की शिक्षा का उद्देश्य घर की चारदीवारी के भीतर संतुलन बनाए रखना और पारिवारिक परंपराओं का पालन करना था। (यादव, 2016)

हालाँकि, कुछ सामंती परिवारों में महिलाओं को संगीत, कला, और साहित्य में शिक्षा प्राप्त होती थी, लेकिन यह अवसर उच्च वर्गों तक ही सीमित था। इन अवसरों का लाभ आम महिलाओं को नहीं मिल पाता था, और वे समाज के समग्र जीवन से बाहर रहती थीं।

4.3 सामंती व्यवस्था और सामाजिक परिवेश में महिलाओं की शिक्षा के अवसरों का विस्तार

सामंती व्यवस्था और सामाजिक परिवेश में महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर बहुत सीमित थे। पितृसत्तात्मक समाज के कारण महिलाओं को मुख्य रूप से घरेलू और पारंपरिक भूमिकाओं तक ही सीमित किया गया। हालाँकि, समय के साथ भक्ति आंदोलन और समाज सुधारकों ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने का प्रयास किया। भक्ति आंदोलन ने समाज में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण माध्यम माना। (पाटिल, 2019)

सामंती व्यवस्था में महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर

सामंती व्यवस्था में, उच्च वर्ग की महिलाओं को शिक्षा का कुछ अवसर मिलता था, लेकिन यह अवसर भी बहुत सीमित थे। उच्च वर्ग की महिलाएं परिवार और समाज में अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए साहित्य, संगीत, और कला में शिक्षा प्राप्त करती थीं। सामंती समाज में शिक्षा को मुख्य रूप से घर और परिवार के कार्यों तक ही सीमित किया गया था।

सामाजिक परिवेश में महिलाओं की शिक्षा के अवसर

सामाजिक परिवेश ने भी महिलाओं की शिक्षा के अवसरों को प्रभावित किया। पितृसत्तात्मक मानसिकता, सती प्रथा, और अन्य सामाजिक रिवाजों ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने से रोकने के लिए एक अवरोध पैदा किया। हालांकि, कुछ सुधारक और भक्ति आंदोलन के नेताओं ने महिलाओं के शिक्षा के अधिकारों की दिशा में कदम उठाए। (मिश्रा, 2019)

भक्ति आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और कई महिलाएं धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित हुईं। विशेष रूप से संत तुकाराम, रामानंद, और कबीर जैसे सुधारक महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों के पक्षधर थे। हालांकि, यह अवसर केवल कुछ हिस्सों में ही उपलब्ध हुए और आम समाज में महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर कम थे।

5. सामाजिक बाधाएँ और सुधार आंदोलनों का प्रभाव

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा के रास्ते में कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ थीं, जो उनकी शिक्षा के अवसरों को सीमित करती थीं। इन बाधाओं के बावजूद, समाज सुधारकों और धार्मिक आंदोलनों ने महिलाओं के शिक्षा अधिकार को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। इस खंड में हम इन प्रमुख बाधाओं और भक्ति आंदोलन तथा सुधार आंदोलनों के प्रभाव पर विस्तार से चर्चा करेंगे। (लाल, 2016)

5.1 महिलाओं की शिक्षा के रास्ते में आने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ

मध्यकालीन भारतीय समाज में महिलाओं को मुख्य रूप से पारंपरिक घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित किया गया था, और इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण उनके शैक्षिक अधिकारों में बड़ी कमी थी। महिलाओं की शिक्षा के रास्ते में कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ थीं, जो उनके विकास में महत्वपूर्ण अवरोधक बनीं।

सती प्रथा

सती प्रथा एक प्रमुख सामाजिक कुरीति थी, जिसने महिलाओं की स्वतंत्रता और शिक्षा के अवसरों को सीमित किया। इस प्रथा के तहत विधवाओं को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था और उन्हें अपने पति की चिता में आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य किया जाता था। इस प्रथा ने महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से उत्पीड़ित किया। महिलाओं को शिक्षा से वंचित करने का यह एक प्रमुख कारण था, क्योंकि विधवाओं को समाज में कोई स्थान नहीं मिलता था और उन्हें अपनी बुनियादी अधिकारों, जैसे शिक्षा, से वंचित कर दिया गया था। (कुमार – भट्टाचार्य, 2020)

देवदासी प्रथा

देवदासी प्रथा में महिलाओं को मंदिरों में सेवा करने के लिए समर्पित किया जाता था। इस प्रथा के तहत, महिलाओं को शिक्षा और शारीरिक स्वतंत्रता से वंचित किया गया। उन्हें केवल धार्मिक कर्तव्यों और सामाजिक अनुष्ठानों में ही भाग लेने का अधिकार था। देवदासियों को मुख्य रूप से समाज के एक हाशिए पर रखा जाता था, और उनके लिए शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास के अवसर लगभग नहीं थे। यह प्रथा महिलाओं को केवल धार्मिक दायित्वों तक सीमित कर देती थी, जिससे उनकी शिक्षा में कोई स्थान नहीं था।

पितृसत्तात्मक समाज

भारत में पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं को शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी से बाहर रखा। महिलाओं की भूमिका मुख्य रूप से घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल तक सीमित कर दी गई थी। इस दृष्टिकोण ने महिलाओं को मानसिक और बौद्धिक विकास के अवसरों से वंचित कर दिया। पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को केवल समाज के पारंपरिक और धार्मिक कर्तव्यों तक सीमित कर दिया गया, और उन्हें घर से बाहर शिक्षा प्राप्त करने या सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती थी। (खंडेलवाल, 2021)

5.2 भक्ति आंदोलन और सुधारकों का महिलाओं की शिक्षा पर प्रभाव

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन और सुधार आंदोलनों ने महिलाओं के शिक्षा अधिकारों की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भक्ति आंदोलन ने महिलाओं को मानसिक और धार्मिक स्वतंत्रता की दिशा में अग्रसर किया, और कई समाज सुधारकों ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अधिकार को सशक्त बनाने की दिशा में काम किया।

भक्ति आंदोलन

भक्ति आंदोलन ने महिलाओं को एक नई पहचान दी। इस आंदोलन के दौरान, संतों और भक्तों ने महिलाओं को आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार दिया। संत तुकाराम, रामानंद, मीराबाई और अन्य भक्ति संतों ने महिलाओं को समाज में समानता, स्वतंत्रता और भक्ति का अधिकार दिया। मीराबाई, जिन्होंने भक्ति संगीत और काव्य के माध्यम से अपनी आवाज उठाई, ने समाज को यह संदेश दिया कि महिलाएं भी भक्ति के समान अधिकार रखती हैं। भक्ति आंदोलन ने महिलाओं को आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया और उनके लिए शिक्षा के अवसरों के द्वार खोले। (पुरी, 2018)

सामाजिक सुधारक और महिलाओं की शिक्षा

19वीं सदी में भारतीय समाज में सुधार की दिशा में कई कदम उठाए गए, जिनमें प्रमुख सुधारक महिलाओं के शिक्षा अधिकारों के पक्षधर थे। राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, और डॉ. बी. आर. अंबेडकर जैसे सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा को महत्वपूर्ण माना और इसके लिए ठोस कदम उठाए।

- राजा राममोहन राय ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अधिकार की वकालत की और सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन किया। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों को लेकर जागरूकता फैलाने का काम किया, और उनकी शिक्षा के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की। राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज में महिलाओं के समान अधिकारों की नींव रखी। (सेन, 2017)
- ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने महिलाओं के लिए स्कूल स्थापित किए और विधवा पुनर्विवाह के लिए अभियान चलाया। वे महिला शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे और उन्होंने समाज में महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा करने के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन माना। (दुबे, 2023)
- डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने महिलाओं के अधिकारों को लेकर एक मजबूत आवाज उठाई और भारतीय संविधान में महिलाओं के लिए समान अधिकारों की गारंटी दी। अंबेडकर ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित किया और भारतीय समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिलवाने के लिए महत्वपूर्ण काम किया। (अम्बेडकर, 2019)

5.3 महिला शिक्षा के क्षेत्र में सुधारों की दिशा और सुधारकों की भूमिका

सामाजिक और भक्ति आंदोलनों ने महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। सुधारकों के प्रयासों ने महिला शिक्षा को एक नई दिशा दी, और समाज में महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण उपकरण माना गया।

महिला शिक्षा के लिए सुधार

महिला शिक्षा के लिए सुधारों की दिशा में सबसे बड़ा कदम था सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को चुनौती देना। भक्ति आंदोलन और समाज सुधारकों ने यह सिद्ध किया कि महिलाओं को समान शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। 19वीं और 20वीं सदी के दौरान, महिलाओं के लिए कई संस्थाएँ स्थापित की गईं, जिनके माध्यम से महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिले। (सिंह, 2017)

सुधारकों की भूमिका

राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और डॉ. बी. आर. अंबेडकर जैसे सुधारकों ने महिलाओं के शिक्षा अधिकार को मुख्यधारा में लाया और इसके लिए ठोस कदम उठाए। उन्होंने समाज में महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलायी और शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसरों की वकालत की। इन सुधारकों के प्रयासों के कारण महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर हुईं, और इसके परिणामस्वरूप महिलाओं के शैक्षिक अवसरों में सुधार हुआ। (थॉमस, 2016)

निष्कर्ष

भारत में महिलाओं की शिक्षा का इतिहास विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं से प्रभावित रहा, लेकिन प्राचीन काल में उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर मिले। हालांकि मध्यकालीन भारत में पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक परंपराओं ने महिलाओं के शिक्षा अधिकारों को सीमित किया, फिर भी भक्ति आंदोलन और सुधार आंदोलनों ने महिलाओं के शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, और डॉ. बी. आर. अंबेडकर जैसे सुधारकों ने महिलाओं के शिक्षा अधिकारों के लिए ठोस कदम उठाए। इस शोध पत्र में यह स्पष्ट हुआ कि महिलाओं को समान शिक्षा का अधिकार देने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को चुनौती देना आवश्यक था। आज भी महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है, ताकि वे समाज में अपनी भूमिका और योगदान के लिए समान अवसर प्राप्त कर सकें।

संदर्भ

- अग्रवाल, एम. (2025). प्राचीन भारत में महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों पर पुनर्विचार। *इंडियन जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज*, 59(1), 34–47.
- अम्बेडकर, बी. आर. (2019). प्राचीन भारत में महिलाओं की शिक्षा की समस्या: एक सामाजिक-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के महिलाओं और शिक्षा पर विचार (पृष्ठ 102–118)। नई दिल्ली: पब्लिशर्स प्रेस.
- चौधरी, एस. (2025). भारत में मध्यकाल के दौरान महिलाओं की शिक्षा: सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं की खोज। *साउथ एशियन एजुकेशनल रिव्यू*, 34(3), 209–222.
- देवी, एस. आर. (2024). प्राचीन भारतीय ग्रंथों में महिलाएँ और शिक्षा: एक तुलनात्मक विश्लेषण। *जर्नल ऑफ इंडियन स्टडीज*, 42(3), 245–261.
- दुबे, एस. (2023). वैदिक शिक्षा में महिलाओं की भूमिका: महिलाओं के बौद्धिक योगदान का विश्लेषण। *भारतीय ऐतिहासिक समीक्षा*, 50(4), 307–320.
- गुप्ता, आर., और शर्मा, पी. (2023). उपनिषद् काल में महिलाएँ और शिक्षा, *जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर*, 21(2), 142–157.
- जैन, एस. (2022). बौद्ध धर्म में महिलाएँ और उनकी शैक्षिक भूमिकाएँ, *जर्नल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज*, 34(1), 55–69.
- कपूर, ए. (2021). प्राचीन भारत में महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण: पाठ्य साक्ष्य का एक अध्ययन, *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज*, 63(2), 98–111.
- खान, एस. (2021). मध्यकालीन भारतीय शिक्षा प्रणालियों में महिलाओं की भूमिका: दिल्ली सल्तनत और मुगल दरबारों का एक केस स्टडी, *मध्यकालीन भारत अध्ययन*, 17(3), 123–136.
- खंडेलवाल, एस. (2021). राजपूत समाज में महिला शिक्षा: एक ऐतिहासिक अध्ययन, *जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री एंड कल्चर*, 16(2), 189–202.
- कुमार, एस., और भट्टाचार्य, पी. (2020). भक्ति आंदोलन के दौरान महिला शिक्षा का विकास, *जर्नल ऑफ*

- सोशल रिफॉर्मस इन इंडिया, 29(1), 112–127.
- लाल, आर. (2016). मुगल भारत में महिला शिक्षा: एक ऐतिहासिक विश्लेषण, मुगल स्टडीज क्वार्टरली, 12(3), 68–79.
- मेहता, वी. (2020). मध्यकालीन भारत की शैक्षिक परंपराओं में महिलाएँ: एक आलोचनात्मक समीक्षा, इंडियन जर्नल ऑफ मिडीवल स्टडीज, 29(2), 77–89.
- मिश्रा, एस. (2019). औपनिवेशिक और पूर्व-औपनिवेशिक भारत में समाज सुधारक और महिलाओं की शिक्षा। साउथ एशियन जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, 28(4), 134–147.
- मुखर्जी, बी. (2017). प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणालियों में महिलाओं का बौद्धिक योगदान। भारतीय शैक्षिक अनुसंधान, 35(1), 91–104.
- पाटिल, पी. (2019). मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा पर भक्ति आंदोलन का प्रभाव। जर्नल ऑफ रिलीजियस मूवमेंट्स एंड एजुकेशन, 12(4), 223–236.
- पुरी, एम. (2018). प्रारंभिक भारत में महिलाओं के शैक्षिक अधिकार: एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण। जर्नल ऑफ इंडियन हिस्टोरिकल स्टडीज, 45(2), 105–119.
- रेड्डी, एस. (2018). मध्यकालीन भारत में सती और देवदासी जैसी सामाजिक प्रथाओं का महिलाओं की शिक्षा पर प्रभाव। जर्नल ऑफ साउथ एशियन सोशल स्टडीज, 23(1), 77–91.
- सेन, ए. (2017). जैन धर्म और महिलाओं की शिक्षा: एक ऐतिहासिक अवलोकन। जर्नल ऑफ जैन स्टडीज, 39(1), 111–125.
- शर्मा, एम. (2015). गुरुकुलों में महिलाएँ: एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशनल प्रैक्टिसेस, 31(3), 45–59.
- सिंह, एन. (2017). मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ। साउथ एशियन स्टडीज, 42(2), 77–89.
- ठाकुर, पी. (2016). मुगल काल में शिक्षा में महिलाओं की भूमिकाएँ। स्टडीज इन मुगल हिस्ट्री, 15(1), 42–55.
- थॉमस, आर. (2016). महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों पर भक्ति और सूफी आंदोलनों का प्रभाव। जर्नल ऑफ साउथ एशियन एजुकेशन, 8(2), 134–146.
- वर्मा, एच. (2015). भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन और महिलाओं की शिक्षा पर उनका प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिफॉर्म, 30(4), 88–101.
- यादव, एस. (2016). बौद्ध शिक्षा परंपराओं में महिलाओं की भूमिका: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. जर्नल ऑफ बौद्ध एजुकेशन एंड कल्चर, 26(3), 44–58.